International Journal of Information Movement Vol.I Issue VIII (December 2016)
Website: www.ijim.in ISSN: 2456-0553 (online) Pages 111-115

निर्णयन चिंतन कौशल के प्रति जागरूकता

राम सरूप
शोधार्थी, पीएच.डी. शिक्षाशास्त्र
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

प्रस्तावना :

शिक्षा मनोविज्ञान में अधिगम को केन्द्र माना जाता है। अधिगम का आधार चिंतन है। चिंतन मानव स्वभाव का एक अभिन्न अंग है। आदिकाल से लेकर वर्तमान तकनीकी युग तक मानव सभ्यता जिस दौर से गुजरी है उसका मुख्य आधार चिंतन है। विश्व में जितने भी आविष्कार हुए हैं, वे चिंतन पर आधारित हैं। दैनिक जीवन में भी हम छोटे से लेकर बड़े कार्य करने से पूर्व चिंतन अवश्य करते हैं। सामान्य रूप से चिंतन का अर्थ सोचना या विचार करना है। जब किसी व्यक्ति के सामने कोई समस्या आती है, तब वह सोचने लगता है, कि समस्या का समाधान कैसे किया जाए अर्थात् समस्या के प्रति अनुक्रिया ही चिंतन है, जो किसी समस्या के उदय होने पर प्रारंभ होती है व समस्या समाधान तक चलती है। डी.बोनो (1976) ने चिंतन को एक कौशल माना है व उन्होंने चिंतन कौशल पर कई वर्षो तक कार्य किया है। भारत में इस कार्य को पासी (2002) ने आगे बढ़ाया है। पासी (2002) ने अपनी पुस्तक ''लेसन्स ऑन क्रिटिकल थिकिंग स्कील्स'' में 27 प्रकार के चिंतन कौशलों का वर्णन किया है, जो इस प्रकार है :

(1) तुलना करना (2) अनुवादित करना (3) सादृश्यता का उपयोग करना (4) वर्गीकरण करना (5) पुनः संगठन करना (6) कल्पना करना (7) अनुमान/आकलन करना (8) प्राथमिकता निर्धारित करना (9) तार्किक निगमन (10) सारांश निकालना (11) मानदण्ड स्थापित करना (12) प्रबलता और कमजोरी को विश्लेषित करने एवं पहचानने की प्रक्रिया (13) परिकल्पनाएं बनाना (14) लक्ष्य निर्धारण करना (15) प्रचार को पहचानना (16) संश्लेषण करना (17) समस्या समाधान (18) परिणामों की पहचान (19) क्रमबद्ध करना (20) निर्णय लेना (21) अवलोकन करना (22) भविष्य वाणी करना (23) औचित्य सिद्ध करना (24) सृजन या रूपरेखा बनाना (25) मूल्याकंन करना (26) अवधारणाएं बनाना (27) व्याख्या करना।

उपरोक्त चिंतन कौशलों में से एक चिंतन कौशल है, ''निर्णयन चिंतन कौशल''। निर्णयन चिंतन कौशल, निर्णय लेने की योग्यता से संबंधित है। निर्णयन चिंतन कौशल तीन शब्दों निर्णयन, चिंतन एवं कौशल से मिलकर बना हैं। किसी कार्य को करने के लिए अनेक उपलब्ध विकल्पों में से एक उपयुक्त विकल्प को चुनने के कार्य को निर्णय लेना कहते हैं। इसका आशय यह है कि किसी भी एक कार्य को करने के लिए अनेक मार्ग या विधियां हो सकती हैं। अतः सर्वप्रथम इस बात की आवश्यकता है कि हम ज्ञात करें कि किसी भी कार्य को करने के लिए कितने संभावित विकल्प हो सकते हैं और उन विकल्पों में

से अपने लिये एक सर्वोत्तम विकल्प को चुना जाए। कौन सा विकल्प सर्वोत्तम होगा इसका निर्णय करना, परिस्थिति, क्षमता तथा आवश्यकता पर निर्भर करता है। इस प्रकार निर्णय लेना किसी एक विकल्प के प्रति वचनबद्ध होने से संबंधित है। अतः हम कह सकते हैं कि निर्णयन एक प्रकार का चिंतन कौशल है, क्योंकि निर्णय लेने के लिये चिंतन के सभी उपकरण–प्रत्यक्ष, प्रत्यय, प्रतीक, प्रतिमा तथा भाषा आवश्यक होते हैं। निर्णयन चिंतन कौशल के तीन स्तर है –प्रत्यक्षात्मक, कल्पनात्मक तथा प्रत्यात्मक। जिस प्रकार प्रत्यक्ष ज्ञान एवं प्रत्यय ज्ञान के लिए तुलना की क्रिया आवश्यक होती है, उसी प्रकार निर्णयन के लिये भी तुलना की आवश्यकता होती है। तुलना के साथ जब निश्चय का संयोग होता है, तो इसका परिणाम निर्णयन होता है।

1.0 निर्णयन चिंतन कौशल की प्रक्रिया के सोपान :

1.1 तत्वों को पहचानना (जैसे उद्देश्य, समस्या या निर्धारित किये गये विचार) : निर्णयन चिंतन कौशल के लिए सर्वप्रथम तत्वों की पहचान करना सबसे अनिवार्य हैं, क्योंकि किसी भी निर्णय प्रक्रिया में अनेक तत्व होते हैं इन तत्वों का महत्व निर्णयों की प्रकृति पर निर्भर करता है। जैसे – परिस्थिति, वातावरण, समय, भागीदारी, सम्प्रेषण अधिकार आदि ऐसे तत्व हैं जिनकी पहचान किये बगैर सही निर्णय तक पहुंचना संभव नहीं है।

1.2 तत्वों का परिस्थितियों के अनुसार संश्लेषण, विश्लेषण एवं तुलना करना : निर्णयन चिंतन कौशल के द्वितीय सोपान में तत्वों की पहचान करने के पश्चात् विद्यमान परिस्थितियों के अनुसार तत्वों का संश्लेषण एवं विश्लेषण किया जाता है। अर्थात् निर्णय लेने के लिए ज्ञात तत्वों के माध्यम से विकल्प तैयार किये जाते हैं तथा इसके बाद विकल्पों की तुलना की जाती है।

1.3 निष्कर्ष पर पहुंचना : निर्णयन चिंतन कौशल का यह अंतिम सोपान है। इसके अंतर्गत विकल्पों की तुलना करने के पश्चात् सर्वश्रेष्ठ विकल्प का चयन किया जाता है। सर्वश्रेष्ठ विकल्प का चयन करने पर ही निर्णयन की प्रक्रिया पूर्ण होती है।

निर्णयन के स्वरूप को निम्न उदाहरण से समझ सकते हैं –श्री रामचरितमानस हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य है। यह एक निर्णयन चिंतन कौशल है। इस निर्णय पर पहुंचने के लिये महाकाव्य का प्रत्यय स्पष्ट होना चाहिए फिर हिन्दी के सभी महाकाव्यों की तुलना करनी चाहिए इसके पश्चात् ही हम यह निश्चय करते हैं कि सभी महाकाव्यों में श्री रामचरितमानस सर्वश्रेष्ठ है। इस उदाहरण से स्पष्ट हैं कि निर्णयन चिंतन कौशल में तुलना तथा निश्चय दो मुख्य आवश्यक तत्व है।

उपरोक्त उदाहरण से स्पष्ट हैं कि निर्णयन चिंतन कौशल के द्वारा निश्चित उद्देश्यों को प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है। निर्णय लेना एक प्रकार से किसी कार्य के प्रति वचन बद्धता स्थापित करना है। यह वचन बद्धता समय या साधन के उपयोग के रूप में होती है। निर्णयन प्रक्रिया में विकल्पों की

विद्यमानता आवश्यक है, क्योंकि इन्हीं के आधार पर निर्णय लिया जाता है। विकल्पों की विद्यमानता यह इंगित करती है, कि समस्या का समाधान एक से अधिक विधियों द्वारा किया जा सकता है तथा वही विधि सर्वश्रेष्ठ होती है, जिसके द्वारा निर्णय से संबंधित उद्देश्यों की प्राप्ति होती है। समस्या के समाधान के लिये यदि एक से अधिक विकल्प नहीं है, तो निर्णयन का कोई औचित्य ही नहीं है। दो या दो से अधिक विकल्पों की तुलना मूल्याकंन के द्वारा ही संभव है। निर्णयन एक निरंतर चलने वाली मानसिक प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत निर्णयकर्ता विभिन्न विकल्पों पर विचार करने के पश्चात् श्रेष्ठतम विकल्प का चयन करता है। यह प्रक्रिया निरंतर होने के कारण इसके किसी न किसी तत्व पर विचार हर समय होता रहता है। यद्यपि यह आवश्यक नहीं है कि हर समय इन विचारों को निर्णय के रूप में परिवर्तित किया जाये। इस प्रकार निर्णयन चिंतन कौशल के बारे में कहा जा सकता है कि निर्णयन चिंतन कौशल, विद्यार्थियों में स्वतंत्रतापूर्वक स्वयं के प्रयास से सीखने की आदत विकसित करता है। साथ ही विद्यार्थियों में ऐसी क्षमता का विकास करता है कि वे स्वयं ही सही निर्णय लेने में सक्षम हो सकें। वर्तमान समय में जनसंचार के क्षेत्र में जो क्रांति हुई है उसने सभी उम्र के लोगों को प्रभावित किया है। चाहे टेलीविजन, कम्प्यूटर, मोबाईल या इंटरनेट हो, इन सभी साधनों से जितनी सुविधाएं मिल रही हैं, उतने ही दुष्परिणाम भी सामने आ रहे हैं। इन दुष्परिणामों से बचने के लिये निर्णयन चिंतन कौशल सही निर्णय लेने में मदद करता है। आज के युग में कोचिंग कक्षाओं का प्रचलन बढ़ता जा रहा है ज्यादातर विद्यार्थी विद्यालयीन कक्षाओं पर विशेष ध्यान नहीं देते हैं और पूर्ण रूप से कोचिंग कक्षाओं पर निर्भर रहते हैं। कोंचिग कक्षाओं के संचालक अपनी कोचिंग कक्षा का बढ़ चढ़कर प्रचार करते हैं जिससे विद्यार्थी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते हैं। ऐसी परिस्थिति में विद्यार्थियों का झुकाव कोचिंग कक्षाओं की ओर रहता है एवं वे बिना सोचे विचारे कोचिंग कक्षाओं में प्रवेश ले लेते हैं। अतः निर्णयन चिंतन कौशल तर्कपूर्ण चिंतन करने की योग्यता विकसित करता है।

अधिकतर विद्यार्थी दसवीं कक्षा उत्तीर्ण करने के बाद असमंजस में रहते हैं, कि वे कौन सा विषय चयन करें? ज्यादातर वे अपने मित्र या परिवार के लोगों के दबाव में आकर ऐसे विषय का चयन कर लेते हैं, जिसमें उनकी रूचि नहीं होती है और आगे चलकर पछताते हैं। परिणामस्वरूप या तो वे पढ़ाई बीच में छोड़ देते हैं या कक्षा में सहपाठियों से पिछड़ जाते हैं। विद्यार्थियों को उनकी क्षमता, योग्यता एवं रूचि के अनुसार विषय चयन करने में निर्णयन चिंतन कौशल मदद करता है।

कई बार व्यक्ति के सामने ऐसी परिस्थिति आ जाती हैं, जब उसके पास केवल दो ही रास्ते होते हैं और दो में से किसी एक रास्ते को चुनना होता है। एक रास्ता ऐसा होता है, जहां जोखिम अधिक हैं। साथ ही लाभ भी अधिक हैं और दूसरा रास्ता ऐसा होता है, जहां जोखिम कम है, लेकिन साथ में लाभ भी कम है। अतः व्यक्ति उस परिस्थिति का सामना करने के लिये या तो आगे बढ़े या पीछे हट जाए। जिस व्यक्ति में जोखिम लेने की क्षमता जितनी अधिक होती है, वह व्यक्ति अपने जीवन में उतना ही सफल होता है।

यदि उसमें जोखिम लेने की क्षमता नहीं होती है, तो वह आगे नहीं बढ़ सकता। निर्णयन चिंतन कौशल के द्वारा विद्यार्थियों में जोखिम लेने की क्षमता विकसित की जा सकती है। विद्यार्थी टेलीविजन, इंटरनेट या पत्रिकाओं में कई तरह के आकर्षक विज्ञापन देखकर प्रभावित होते हैं। वे बिना सोचे विचारे विज्ञापित वस्तु खरीद लेते हैं। जैसे फेयरनेस क्रीम, हेयर आईल, साबुन आदि उत्पादों के विज्ञापन से विद्यार्थी बिना आकर्षित हुए नहीं रह पाते हैं। कई बार इन उत्पादों से नुकसान भी झेलने पड़ते है। निर्णयन चिंतन कौशल ऐसे भ्रमात्मक प्रचार से बचने में मदद करता है।

2.0 निष्कर्ष :

प्रत्येक व्यक्ति दिन प्रतिदिन सामान्य निर्णय लेता है, ताकि वह अपने जीवन को नियमित रूप से संचालित कर सके। यदि वह सही निर्णय नहीं ले पाता है, तो उसके कई दुष्परिणाम उसे और उससे संबंधित लोगो को भुगतने पड़ते हैं। निर्णयन चिंतन कौशल के द्वारा ऐसी योग्यता विकसित की जा सकती है कि व्यक्ति अपनी समस्या को पहचान कर समाधान के विभिन्न विकल्पों में से उचित विकल्प का चयन कर समस्या का समाधान कर सकता है। यदि विद्यार्थी जीवन में ही निर्णयन चिंतन कौशल विकसित कर दिया जाये तो विद्यार्थी अपने जीवन में आने वाली बड़ी से बड़ी समस्याओं का समाधान कुशलता पूर्वक कर सकेगें। आज बदलते समय में शिक्षकों को चाहिए कि वे विद्यार्थियों के सामने ऐसी चुनौतीपूर्ण परिस्थितियां विकसित करें कि वे उनका सामना करने के लिये हरदम तैयार रहें। सही मायने में निर्णयन चिंतन कौशल एक ऐसा कौशल है, जो विद्यार्थियों को वास्तविक जीवन जीने के लिये तैयार करता है।

3.0 संदर्भ :

1. अस्थाना,एस. (2008), इफेक्टिवनेस ऑफ इन्सट्रक्शनल मटेरियल ऑन थिंकिंग स्कील ऑफ क्लासिफिकेशन इन टर्म्स ऑफ स्टुडेन्ट्स अचिवमेन्ट एन्ड रिएक्शन एट मीडिल स्कूल लेवल, पीएचडी, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर।
2. डिबोनो (1976), न्यू थिंकिंग, एवॉन बुक्स, न्यूयॉर्क।
3. धाड़े.एम. (2008), इफेक्टिवनेस ऑफ इन्सट्रक्शनल मटेरियल इन साइंस बेस्ड ऑन थिंकिंग स्कील ऑफ क्रिएटिव प्राबलम सॉल्विंग इन टर्म्स ऑफ स्टुडेन्ट्स अचिवमेन्ट एन्ड रिएक्शन एट मीडिल स्कूल लेवल, एम.एड.लघुशोध, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर।
4. पासी, बी.के. एवं जोशी, ए. (2002), लेसन्स ऑन क्रिटिकल थिंकिंग स्कील्स, एच.पी. भार्गव बुक हॉउस, पब्लिशर एन्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, आगरा।
5. शर्मा,एन.के. (1990), मनोवैज्ञानिक विचारधाराएं, प्रकाशक हरप्रसाद भार्गव, आगरा।
6. शर्मा, एम. (2001), डेवलपिंग इन्सट्रक्शनल मटेरियल फॉर थिंकिंग स्कील ऑफ क्लासिफिकेशन एट प्राइमरी लेवल, एम.एड. लघुशोध, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर।

7. त्रिपाठी, जे.जी. (1995), मनोवैज्ञानिक अनुसन्धान पद्धतियाँ, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
8. त्रिपाठी, आर. (2002), इफेक्टिवनेस ऑफ इन्सट्रक्शनल मटेरियल ऑन थिंकिंग स्कील ऑफ क्रिएटिव प्राबलम सॉल्विंग इन टर्म्स ऑफ स्टुडेन्ट्स अचिवमेन्ट एन्ड रिएक्शन, एम.एड.लघुशोध, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर।
9. तिवारी, यू. (2001), इफेक्टिवनेस ऑफ इन्सट्रक्शनल मटेरियल इन साइंस बेस्ड ऑन थिंकिंग स्कील ऑफ आईडेन्टीफाईंग द प्रोस/कॉन्स इन टर्म्स ऑफ स्टुडेन्ट्स अचिवमेन्ट एन्ड रिएक्शन एट मीडिल स्कूल लेवल, एम.एड.लघुशोध, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर।
10. विजयवर्गीय, डी. (2007), संकल्पना प्राप्ति प्रतिमान की प्रभाविता का उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में विज्ञान विषय में आलोचनात्मक चिंतन के विकास एवं प्रतिमान के प्रति प्रतिक्रिया के संदर्भ में अध्ययन, एम.एड. लघुशोध, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर।
11. बुडवर्थ,एस.आर. (1963), मनोविज्ञान, द अपर इण्डिया पब्लिशिंग हास लिमिटेड, दिल्ली।